

2826

Handwritten text in a cursive script, possibly a signature or a short phrase, located on the upper right portion of the document.

Handwritten text in a cursive script, possibly a signature or a short phrase, located on the lower right portion of the document.

ॐ नमः वक्रसखाय ॥ ॥ नागहनेवी ॥ गालरूपः ॥ मध्यमं नृमहान्तिकनकनादिगः पूर्वविदहृत्तलीवादि
पञ्चभूपनलांताय सिद्धनकनृखवनः पञ्चवर्ष्यं च दिनमापि यात्रः नमः पञ्चवर्ष्यं च दिनमापि यात्रः नमः पञ्चवर्ष्यं च दिनमापि यात्रः
गविष्णुगपञ्चमूर्ति ॥ ५ ॥ भृशद्विपाननवर्हिगि दिनमानसाः हनंगुहयतिमिनघनधाननृ ॥ ५ ॥ जागये
दमस्य याउपदिपः नाउपदिपः पत्रिजांगुदाने २ स्वसननाउपदीपञ्चद्विदिगगुवनः वाउदीपणीत्वउपन
५ ॥ दिनदवरात्रायि यः नननृधिनयावियः सफः भृशाननृविद्यात्र २ भृवननाउदिवियसायकः वक्रः महि
रूपनिधिमिलितैकदयनि ॥ ५ ॥ गुनृवननृगिवनसंगगतिपत्रिणावनः मनकसुमउरूपनस रनिपूजा २ प्रह
वपत्रिणावनधिः सफः पत्रिपूत्रिणावनकलानिधितकलसगुरुगी ॥ ५ ॥ ५ ॥ नागपद्मीजलि ॥ गालमाथ ॥
भादिनृनृनृस्वराय विष्णुः भृनिनृभृननृकलरुमिः सृगवभृनृगिखनसा २ सर्वमधुलसीस्थिती
२ उकताकिनीसर्वगगलायापितः पूजितावज्ञाचार्य २ विंशितमानसाः वाधिस्रणावभृनृस्तसिद्धि
प्रदाता ॥ ५ ॥ तिसमाधियागामैगविन्यास २ स्वस्वदवपत्रिपूजा ॥ कासूपाखानमः नमयनृपः भृ
दयनसवदिवात्र ॥ ५ ॥ विष्णुकलिसमल्लगुंकालजायकूयमत्र स्वणाव २ विष्णुर्यैकमभृ
दयनृपसर्वदवपत्रिसंस्थिती ॥ ५ ॥ गुनृवननृगिप्रगतधनियाः हनविगथागतवज्ञा २ वि
गुवननृयापितगस्वरावस्तुनिगनागगनृनीष्टा ॥ ५ ॥ २ ॥ नागललि ॥ गालरूपः ॥ भृनृनृ

[illegible]

वगनध्वनीया २ रुनयिवाद्यवज्रमवनमवयीलि ॥ कु ॥ ४ ॥ वागकुरुव ॥ दालमय ॥ गाकदहनयश्च
हानसवय २ यंत्रामियात्रमयंत्रमात्रियुजिया ॥ रुक्मादववलिवायश्चिदुवनवीन ॥ वीवमवायकसमया नन्द
॥ कु ॥ वीवदिश्वत्रमरुजानन्द २ कत्रकमवासनदुदयानन्द ॥ कु ॥ यंत्रवद्वयंत्रस्वधहानसवय २ यत्रा
सवनवयुमादितदुदया ॥ कु ॥ उं आ १ हूं कीं खं (गाधनकवीन २ उमवयं लधनिवीवमानन्द ॥ कु ॥ ५ ॥
वागकुरु ॥ दालमाथ ॥ ऊयं वा द्रविदवीववदवीयत्रि २ मयत्रमवासरववनिनवत्र ॥ नरुगवकियाद्रकमः
वमदिमधुक्त नडुवयनरुनकावा २ हाउमात्रआरुवधविरुषिक नायत्रयष्टुवावा किलिचिलिगिलयगिन
यष्टिनरनाका ॥ कत्रमिखयत्रधत्रि मधुमात्रविरुषिक २ कल्वखद्वंगधत्रीमककशी ॥ कु ॥ गित्रमिमिध
वधत्रि विनयववगीता कसुत्रिकयत्ररुययीरुम्यावा ॥ कु ॥ रुनयिमवनवज्र वाद्युतिदास्य २ युष्टमा
मिवदुयानिही रुदरुवयास्य ॥ कु ॥ ३ ॥ वागमधुमन ॥ दालमय ॥ शिवकनविगणिमधुतमायस्थि
नि आनन्दमवनिधवा २ वज्रवावाही आलिगलसमवत्रनानावमिमदादवा २ ननाहं २ ननाहं २ ननाने
नहं हना ॥ निलवर्णवकुवकुयनिमुखेष्टिनरुवयत्रमानन्दमवनिधवा २ विश्ववज्रमृद्वनयुजदा

यमकृदधनदातु आरुपणमाणाकिना॥ कु ॥ वरुचयुगजवर्ममित्रखदांगधत्र विवमानन्दमत्रकि
धवा२ कत्रकि कयात्रखयत्र मयागधत्र विष्टववम्भ गिरधवा॥ कु ॥ दिगीविदिगीकाकास्यादियमकाः
दियात्र सरुजात्रन्दमत्रकिधवा२ नमामित्रमामिणी चक्रत्रमंत्रत्रगमयुत्रवत्रवद आत्राधिना॥ कु
॥ १ ॥ वागरेलव॥ दालदुर्मान॥ उं आ॥ हं हं हं अंकखादा॥ मनु विनायकवात्रव२ यूजायुक्ति
नयुजमंकावमन्त्रवयम्मात्ररुवन्तु॥ स्वस्वस्वादिस्वादि वलि यूजात्रययदाकय२ विष्टुत्रयं वामियात्र मयथ
सात्रिथ यं वरुन अत्रिना॥ २ सर्वयक्रवाकमरुमयुमत्र यिसात्रायम्मात्राअयम्मात्रव२ अकठाकिन्याः
दिअयुम्मात्रात्र ॥ दं वलिष्टुद्रुव॥ कु ॥ समयात्रकनुमाकसिद्धिं सखमयदविष्टुद्धिं २ यथेवः
यथेव दुजथयितेथत्र डिष्टुथमाककर्मथत्र॥ कु ॥ दानयमिसर्वकथ्येसिद्धिं मनात्रथसर्वसख
यदमानि२ आसंसात्रकथागमवयन स्वदायंकात्ररुवन्तु॥ कु ॥ ८ ॥ वागरेलव॥ दालमंयु॥
विविहं विहन्त्रमात्रविनागिवदन२ दवन्त्रअसत्रगलरुवन्तुदुक्ता नावयित्रनमामिणी मंत्रवदि
वा॥ २ कु ॥ वरुयागिनित्रकित्रमामत्रसर्गनावा नावयित्रनमामिणी मंत्रवदिवा॥ कु ॥

१ सप्तवक्त्रविनिर्वाहस्य विरुद्धिः गगनतुङ्गनिर्वहविवाहाः ५४

वज्रवादी आलिङ्गनकः १० शुभासदीपविश्ववत्समवसेनाशिवः ॥ ५५ ॥ गगनतुङ्गनिर्वहविवाहाः
क कनकावलीयवत्समवसेनाशिवः ॥ ५६ ॥ चादशतुङ्गवत्समवसेनाशिवः ॥ ५७ ॥ नीलमंदारवत्समवसेनाशिवः
ऊरीतः ॥ ५८ ॥ ॥ वागवत्समवसेनाशिवः ॥ ५९ ॥ वक्रिकुलतकंठिवाचकमखवत्समवसेनाशिवः
गुप्तनिर्वहमात्राः ॥ ६० ॥ जीवशक्तिवत्समवसेनाशिवः ॥ ६१ ॥ यूननाथमदुज्ज्वालाः ॥ ६२ ॥ वज्रकवाचकदा
याकं ध्वस्त्रिवत्समवसेनाशिवः ॥ ६३ ॥ संपरिओगिनीकमवतिदामिगवा मदासखमदियुमादः ॥ ६४ ॥ वज्रवादी आ
लिङ्गलसंवत्समाशिववत्समवसेनाशिवः ॥ ६५ ॥ वाहुतिवत्समवसेनाशिवः ॥ ६६ ॥ अश्वत्थवत्समवसेनाशिवः ॥ ६७ ॥ सद्रुजस
वृष्टिप्रेया गावककर्णगा रुद्रवत्समवसेनाशिवः ॥ ६८ ॥ यद्वा आलिङ्गनवत्समवसेनाशिवः ॥ ६९ ॥ विनामयिषुचकनूला
॥ ७० ॥ ॥ वागवत्समवसेनाशिवः ॥ ७१ ॥ गजजिह्ववत्समवसेनाशिवः ॥ ७२ ॥ ध्वस्त्रिवत्समवसेनाशिवः ॥ ७३ ॥ याकमवत्समवसेनाशिवः ॥ ७४ ॥ अंगवावत्समवसेनाशिवः ॥ ७५ ॥ मवत्समवसेनाशिवः
वत्समवसेनाशिवः ॥ ७६ ॥ वक्रिकुलतकंठिवाचकमखवत्समवसेनाशिवः ॥ ७७ ॥ नीलमंदारवत्समवसेनाशिवः ॥ ७८ ॥ ऊरीतः ॥ ७९ ॥ क कनकावलीयवत्समवसेनाशिवः ॥ ८० ॥ शुभासदीपविश्ववत्समवसेनाशिवः ॥ ८१ ॥ वज्रवादी आलिङ्गनकः ॥ ८२ ॥

रुद्रिभवादिभक्तकनकामयचन्द्रमुखश्रुतिविक्रान्त २ शुभिसन्निवर्तिवन्धवनायक विवित्रकुमराविन्दविभ
२ कनकलक्ष्मीगात्रावित्रविन्दवन्धुश्रुतिसयवसंसावना ॥ ५ ॥ ११ ॥ रागधनापि ॥ दालकटि ॥ शवाकाक
मदासुररुद्रयि चवञ्जानन्यथाकायलि २ विद्रुवनन्दप्रियाडमतामखवाया चन्द्रसूर्यडयमप्रिया ॥ नयायली
नानयनवीना २ विद्रुवनचक्रसमृद्धिनी २ सर्वविकल्पविध्वंसनदवी अनुरक्तज्ञानदलदायलि ॥ ५ ॥
अमृतारुमधुलदयास्थिति कल्याणलनीलवृष्टिनि २ कवकिलयवन्द्यदोगधारी प्रह्लादज्ञानदलदायलि ॥
५ ॥ दिग्वलनवायामककणि चक्रिकुलकण्ठिभ्रमिनि २ मयलनाचक्र ॥ गारावा श्रीवन्दनलनित्रमाला ॥
५ ॥ सर्वमथागतजननिदवी विवेदिभक्तवत्सला २ श्रीवन्दयामिनी चवलागिदगक गावयिसमवस
वका ॥ ५ ॥ १२ ॥ रागरेलवी ॥ दालकटि ॥ नमामिनमामिनिनभक्तुकरंभक्तवद्रुत्रमूर्तिआलिनिः
तायंनयानयंनभक्तुसावृषवद्वधर्मआवयसावा २ ॥ ननाहं २ जगत्संसारदधवीयामनाहं नमस्तु २
देवकिमववा ॥ २ नमामि २ श्रीमान्निगुवन्धव अद्विसिद्धितरदायलि इतिभक्तवत्सलसर्वपायकयंकरदा
नयन्यनुद्गमाक्यदा ॥ ५ ॥ राग ॥ दाल ॥ नमामि २ धर्मधोक्तुवाययन वाहुगदवावयत्रिः

मल्लिका २ बाउडागात्रलवृत्तार्त्तिकावा सर्वद्वयविमलिका २ ॥ कु ॥ वनाकागनाविकागनाका ॥ नमामि
२ वागीश्वरमधुतयमगितिनिवासिना २ सत्वविमादिनदृष्टविनागनयलमामिजिनवकुम्भवा ॥ कु ॥
॥ १३ ॥ वागमानव ॥ दालमा ० ॥ वक्रिलिद्यातिवयात्रिवृत्तानिनी सिधिलियाधुनिर्जवृकडवाकिनी ॥
नमामिप्रीजागाश्वरहानश्वरी २ त्रिलिङ्गद्वीचिह्नवन्धविभा ॥ कु ॥ पूर्वदुक्तव्याधिमदक्षितदिग
द्वी २ जाकिनीधियिनी वडसिकंवाऊनि २ बहुवदिगकुक्कादलनकुद्वी २ त्रिलिङ्गद्वीनातयिद्वी
द्विद्वयवृक्का ॥ न्युज्जमवगन बाउडागात्रिलीसमवसंकाव ॥ कु ॥ १४ ॥ वागहेतवी ॥ दालइजमान ॥
अष्टकगुत्रयावदिगंविदिगीकुवन धंसिन्मात्रवहुवयन २ गगलालयव गगलवृत्तवृत्तकावा गगलदामव
वज्रयवृत्तिका ॥ दं दं दं नमामियंवा २ जाकिनीयं वज्रवकि हानजाकिनीयननदृगगना ॥ कु ॥ पूर्वदु
क्तवयधि मदक्षितवहुकुवन विद्यनमावा विद्यनसंतिथा २ वज्रजाकिनी धाववनात्रजाकिनी वंजवजः
किनीवहुवद्वी ॥ कु ॥ सिधिनी याधुनीर्जवृकडवाकिनी खदांगयवधुञ्जीकगठुठदृक्का ॥ कु ॥
जाकिनीदीयिनी वडसिकंवाऊनी धावतवायवकासवदनि ॥ कु ॥ जिनऊननिद्वीजाकिनीहुहु पुयि

समस्त यंत्रमूलांशुवत्तुसुनित्या २ यत्र दृष्टं कवजं ० खट्वांगया २ युतमामिद्वीधी हानद्वी ॥ कु ॥ १५ ॥
॥ वासुदेव वासुकि ॥ दत्त ॥ विष्णुकर्मनगणिमपुत्रराजिन मोतिकर्तृकपुत्रमनिरुधिना २ द्रविणवदनः
उत्तयवक्षत्रिन ॥ नमामिद्वीविष्णुयायिना ननाकारं ननाकारं ददनाका ॥ कु ॥ जातमुरुगुरुवसं
साया एष्टिकनरुयमावृत्ती २ अष्टमकारुयड २ खवितावनि ॥ रुमनिरुगनयवियानिना ॥ कु ॥
सन्धिविनिर्जितुर्नेमिकीना दयासुवनववन्दिना २ नमामिद्वीधी आर्यानावा अनगविष्णुनिववावः
स्त्री ॥ कु ॥ रुमनिरुगनियवमादित्रविना किलिबकुसमावय २ ऊवमऊवमकुश्यादयनामिक ॥
दानयमिष्टुष्टिनिर्जित ॥ कु ॥ १७ ॥ ॥ वासुदेव वासुकि ॥ दत्त ॥ विष्णुकर्मनगणिमपुत्रराजिन मोतिकर्तृकपुत्रमनिरुधिना २ द्रविणवदनः
माकवदुवदन २ रुतवकावित्राष्टि ननुवायाय भादगऊवमध्वनक ॥ वायादिष्टुष्टुवालिगलक सं
वतसवययसंज्ञाना २ महासद्विलनलवित्रासयि युगमाथसंवववाया ॥ कु ॥ जाकिनीनामाखधुनी
हानयिनी वदयागनी २ वदवकवदुयुगवदुआनन्द वदु कनवदुसाधनक ॥ कु ॥ कायनाकविक
विष्णुका आथजिलिवीवीस २ बाहिवज्ररुकर उकलाहवा ॥ यागिलीदिगविदिम ॥ कु ॥ काका

प्रादिअष्टद्वी नानात्रयीमाह २ यद्वयद्वयजागद्वय बालवनाउवलंतं ॥ कु ॥ वाधितकधर्मजाधनयि
यावधित्रयागिणीद्वय २ कवृषमाहद्वयनमकधीसेवत्र नावयि सरुजानन्द ॥ कु ॥ १० ॥ वाग
गावलिदाहवा ॥ टालमा ० ॥ सर्ववृद्धविवृद्धमात्रनितिवधदनिवृद्धनि २ वडमधुनवडयागिणी
हिकात्रधिवर्णीविवावना ॥ नमाभिवृद्धवासिद्धियागिणीगलमधुना २ अष्टविद्धिसर्वसिद्धियागिणी
विष्वमात्रयष्टिना ॥ कु ॥ आदितमधुल नऊसमत्रसदीयमात्रस ॥ गारिना २ वडिकुपुलकष्टिः
वावकुभखलविरुसिना ॥ कु ॥ कवृषिखयलमात्रद्वयनि मककगदिगवना २ वधुमधुखदीग
धवि लालकिद्वरुयंकवा ॥ कु ॥ दुष्काद्वीनकनका सकवविष्वयायिना २ दुष्काववनसि वः
गरुध्रिया अवधुवकर्तृयागावयिया ॥ कु ॥ १२ ॥ वागकात्रयियंत्रम ॥ टालऊटि ॥ द्रवधि
वमकूटकिवमिमिलीकामिन ववलयुगा २ सादियवडसत्त्वयत्रमस्वत्र यद्वयद्वय २ ॥ कु ॥
वाविद्वुलनवाविद्वुगुक्कगनदद्वय २ ॥ कु ॥ गारसुनिवद्विधिक ॥ गनयद्ययुगा २
॥ कु ॥ ३ ॥ विद्वुवनकलितमन्त्रि अनवायनावनयवकि ॥ २ नावयिवडसत्त्वयत्रमस्वत्र

लिनवकी ॥ २ वमि सदसुकी बलदगा सूर्यस्य लामवकी ॥ २ वरु विरु वय विम्वर अन गायन मरु
वकी ॥ कु ॥ १२ ॥ वागमावपी ॥ दान रुदि ॥ धूमगाति वन्दु कलानि २ री समर्थि गलक ॥ विग
या ॥ रुकुयिया व दं द र कल कलानि २ नानाया वव मदा वलियुव ॥ कु ॥ समया वरुि रथो गां
वनी दवी २ वरु विव रु वि व ड मख रुया व ॥ कु ॥ निग क का व रु ग वलि (गा रु २ वरुि क व न स म
कल रुया व ॥ कु ॥ वी द मदा वलि विधि वन ग या ॥ २ मन्म मान्म वरुि व आ रुा व ॥ कु ॥ २० ॥

१ याग याम कलि ॥ शुक्ल युरा वा ॥ शुक्ल स्वना ॥ कोलाडा ॥ नि न नि चू नं वयूरव
वहं ॥ जाडा ॥ कां ग यु इ स्वा न नि व ॥ शुक्ल ॥ कोलाडा ॥ मान्या नृ ना जा ॥ याम कलियु वे सं ॥ जाडा
१ य त्या न वर्ल गन्ध पुर लि गु न यू क क लियु रं य द्वि ना नि ॥ शुक्ला द्या ना शु वा न य स म न च नु न पि य सि
ष लु वूर्ल ॥ ग्रीष्म गाल य द्वि नं ॥ शुक्ल क न स दृ शा राज नं सं लि न ग ॥ द त्वा सं द्य पुर क्का म न र व न ग ना
दि य मा य्ना गि यानं ॥ यान या ॥ ॥ सो व लु निल कं सु चि वं सु रु षा र क्का द द नि वि धि व रु ख
लू य म नू य्ना सि हा स न पु व न वि धि ग ल न र ह य स मं नि व द्ध वं य षा सू न सि द्वि व द्ध ॥ त व न य

[illegible]

[illegible]

१ नागवसन ॥ ॥ न क व र्ग सु ला व ना ॥ ह्य न द हा व स ह सं ॥ न ल हा न वि
ह वि ता ॥ वि श्व ना र्थ ला क ष्व नं ॥ पु न मा मि शी द व ला क ष्व नं ॥ म इ त कु मि ता र सि त्र ध रं ॥ श्री जय
ला क ष्व न मां स त्र नं ॥ श्री ला क ना र्थ व पु न मा म्य हं ॥ प्रि ह व न प गि त व न रं ॥ ॐ ॥ त्वं श्री ला क ना र्थ ला क
उ ष्मि त्र ॥ त्वं ना र्थ भ स व व प ह न न ॥ ॐ ॥ त्वं ध र्म ना र्थ मां त्र कां क ला गि ॥ म द ४ र व षा वि ह न नं क
ला गि ॥ ॐ ॥ त्वं स त्र नं स व ला क हि ता र्थ ॥ म दा नि ड ४ र व नू सि क ला गि ॥ ॐ ॥ त्वं वि त्रिं कि ना रा
य न न म सु ॥ स व द व गं ध रं पु ज न ॥ ॐ ह म सु ॥ १ ॐ न म क ना र्थ यः ॥ १ ॥ ला क ष्व न नं मा
१ ॐ न मा दि पं क ना म ॥ १ ॥ म द ४ र व स क मा ल वि वि गु प १ ॥ स गाल यं स ग न सं ष्य प त्रि क मा य
य ॥ ना य त दि पू ज रा ॥ ग य म रु नि क्ष नं ॥ त ना व नि प गि त र व र व ष्ट न स्य ॥ व स त्र या ॥ १
न किं चि द् द्रु द क वा य म व व ॥ ॐ गि त ल स क सु ग नृ नं ग था ॥ क री ति पा दी ॥ सु ग न स्य
१ ॥ द्रु या त न क व लं व म र्प गि सो न व ॥ ॐ वा य या ॥ २ ॥ सु पि त वा सा पि त रू मि म नृ ल ॥ य वि क
मा य मा र्थ य क रा ति नि ल या ॥ ग था ग न स्या र्थ ग ॥ १ ॥ रु म स्य ॥ वा री ग म द्य न म हि रु ॐ ष्व नः ॥

पागासया ॥ ३ ॥ विहङ्गीतयनसपुष्पमाजका मृनिद्रसंघा र्थगता लमार्जत । रुवह्यो कान्ति ।
वपुधना ॥ वेगं पुवृद्धवृद्धं पुदं यथो सुधीः ॥ गायञ्जु कृतया ॥ ४ ॥ श्रीखण्डकृमसूत्रम्
रितवदनानि रुवन्तु ते सुगितका निसुवृद्धसंघे यथापुवलिङ्गमातितका पुमह सा
दर्य ॥ यपयुधिय विस्तारवर्णः पके गंधया ॥ ५ ॥ काष्ठीवर्णालमृगानां रिसुगंधद्रव्यं
यस्मिन् गतवपुसि पुगितय यनि । संपुद्धः वर्णवियूलं वसुगंधदहं ॥ नषां रवनिपव
मलग्नमलानि धनं ॥ नसा कया ॥ ६ ॥ यस्मिन् प्रविगं सुकृमात्रवासं संपादय ॥ ७ ॥
निरुगारत्नमलः ॥ रुयवकाष्ठासमवायकथाः यथापुवलिङ्गुवर्दविष्मल ॥ ८ ॥ जजमया ॥ ९ ॥
रुमवाविजं विविधिपूर्वसुगंधयुक्तं गुदवितं सुमने साप्रतिपादयनि । यस्मिन् गतसुग
तसासनसां धिकेत्यः यथापुवलिङ्गुवर्गजमहदुलक्ष्मीः स्नानया ॥ १० ॥ सांयाजिकं सहजं
वज्रधुपवासं रुद्राददाति सुगगायससां धिकेत्यः ॥ यथापुवलिङ्गुवर्तं वधनधनं नसात्

संभूदमवाययदंरुत्तुजलरुनं॥ ध्यासया॥ ६॥ तुलार्थं कवयः अपनीतः यसां पि कलः पुः
गिया अदि यां संदं नीयानय ताहि वामाः रु वनु गदि वा सुखाय रोग्य॥ म नया॥ १०॥ धागुरु व गदि
लं वा वु गं वयन सादि कं॥ स्वं धमूलादि कं दान यः अयि न दं लं लं रु न॥ रुला रुलादि॥ ११॥ सु
॥ ११॥ तलं स्व रु सु ग च नायाः स्वादा वि नं य मुति वा निया गुं॥ द दानि सं द्यो य ग नः स्म मयः रु शु नः
रुया र्थ य दल रु न॥ सख न दान॥ १२॥ ला पु के य य क नं यो चि कं य व कं वः सम्यक् दानि व म सा
दिवि धान मु कं रु ग रु व व गि त्या रु वि सान मानं॥ स काय वा क्र म न सौ जिन सां थिक
॥ माः ध्याया॥ १३॥ यं वा मृ गे यं व सु गं ध व लं इ धी रु गेः कु लु स राज नाथेः॥ य नार्थ दानं प्र
काला मि सिं थः ग प्रा पु व नि रु म रु नि धनं॥ यं वा मृ ग खान या॥ १४॥ वी हिं व धा न्या द
मि स र्व जा गेः रु द्वा वि नं य यु द दानि सं थ॥ १५॥ रु लं ग रु रु व रु ति लः स र्व धु का मं समु
यं मि सं म्य क॥ वी हिं मा॥ १६॥ वि रु वा स र्व सं य ना स र्व व रु स म नि गं जिन स द्या य वा द
या न॥ ग रु ल रु रु ला यु या न॥ जा कि या॥ १७॥ व ल वा रु ना स य ना राजा रु व रु ध न धा
रु रु लु रु रु रु रु रु नि॥ ग वां का टि स ता नि व॥ का टि क न्या म रु दानं॥ पु न दानं वि रु व रु॥ जा कि॥

मि कः संघ स्याजनेदवा स वृत्त सूरव म द ग ॥ च न म या ॥ १० ॥ जा गार व इ व रु ल सु गाल
संघान नो गम मरि वं शुभायाः आसादि का मि त सु ६ शिव स वे कः शुभा न सो गालि निष प्र न
ना ॥ च न न या ॥ ११ ॥ य स न च वृत्त मृ इ या नि पा दा म हा व ताः शु क र हि व य धृ कः ॥ गु ल प
द न च वृत्त म र्क्यः सु उ य उ याः सूरव मा यू व मि ॥ च क न या ॥ १२ ॥ मा ह व्य ग्न व स व म
क मि क मि न य ॥ व क र्य गं तु ल स ह द क न व न ग ग म्म द द मि स ग त कि न स वि क र्य
स या यू व मि उ च न ल ग्म स वा ज ल क्मी ॥ नि स वा व या ॥ २० ॥ सो व र्ग उ य शिव वि क र्ग
मृ ल य व ॥ सो यो द नं सु य वि य र्ग स पि द या ॥ र क्क द द मि सु ग त य ग र्ग ल मा य ॥ स्या न
स य र्ग म स मं द ल म य म य ॥ या न या ॥ २१ ॥ न व्य मि वा ग न च वृ दि रा वं ॥ श वा ग्य ग मि ल
म न ल र्ग म् ॥ र व र्ग धा व सु वि ग्म व र्ग ॥ र य म्म द न ल ल र्ग म नू यः ॥ इ ष ड या ॥ २२ ॥ मि य
वि नि ग र्ग द वा न वि र्ग स प न वृ दि वा न ॥ सु ग र्ग वि य द न न ॥ ना हि जा ना मि ड र्ग मि ॥ म नू य ॥
२३ ॥ द्वा य स न म न सा भु वि र्ग म नू य ॥ ४ सं द्यो य या न क व र्ग य दि ग्म नि का ल दि या र्ग ना य व न वा ड य
॥ गाय म्म र्ग ॥ क्क या यू व मि म व्ग र्ग म्म र्ग दि य या न ॥ या न या ॥

॥ २३ ॥ कठिनिलकुसुमं व ॥ अक्षयनयनकुति ॥ विष्णुलक्ष्मि यद्विद्युत् ॥ जायत यद्विद्युत् ॥ गामला
ना ॥ सनामया ॥ २४ ॥ सोदयसुमिसां नयसां न कानं ॥ दिव्यांगमद्विहानविकारवकुं ॥ ग
म्यानयंगगसंयुतयुदानान् ॥ सावयविविधिलागमहानिधनं ॥ मुखमित्रया ॥ २५ ॥ यथानुर
रुतद्वय ॥ दक्षिणयुयुक्ति ॥ धर्मार्थकाममाकुं ॥ पुण्यवलिहकिमानस ॥ दक्षिणया ॥ २६ ॥
उद्यानरुद्रमनाः युदाता ॥ अक्षयः सलारिह विना धनायो ॥ सुसंस्तुताः पादयुग्ममहात्मा ॥ स्व
र्जननुवात्रिवत्रयायी ॥ त्रकामया ॥ २७ ॥ कुशीरुताहवति जगतां माग्युदाना ॥ कथावम्यवम्यति
सुविनं ॥ हतया नाजनास्त्रीः ॥ धर्मस्वामिह वतिनियतं ॥ सर्वसाकस्यना ॥ आनासोगकुलुगतिग
हनं ॥ त्रयवानलगताली ॥ क्रसाया ॥ २८ ॥ रुनाद्वलरः कठकेनन केः कयुत्रगातं विधु
यताः वत्रलिमर्त्याः सुगतस्यमिष्या ॥ यदानिविगुतिविरुषधनि ॥ शरवनमा ॥ २९ ॥ नाभि
वियं कामगितस्यदहं ॥ नवायिगसुं ननु वज्रवं ॥ गामादिदानससंस्थैः मेगुविहा ॥ अयुक्ता
मिषर्त्याः ॥ गामादिलगुं ॥ ३० ॥ शजिनद्वय ॥ सर्वददध्वरवति ॥ गुरुं दत्तागल्लमासर्वका

[illegible]

बुध कृति सहस्रानि रा क न रु व न रु ल न य द स र्वी थ सा धनिय व मा ध सा धनिस व ना य नि ह
स सा ह ॥ य हुं मां ध व ना ध व य लि ख नि स्वा य य व तु स्व सि क न य क ति स ह सां नि जा नि स
म शर वि धा नि दु ग नि ना लि ग व नी ज न म ता वा जा व कु व रि रु वि धा नि दि न दी न जा या गु म
वृ मा ता यां पा यं य लि कृ य ग कृ ति कृ त्या ध व न्या पु रा व न जा नि स मा या ना ना म धा व नि य नि स
मा क ॥ १ ॥ न मा रु ग व र म ॥ श्री कृ मा ल रु ता य वा धि स ता य म हा स ता य म हा का वृ ति
का य ॥ न शु धा ॥ ३ ॥ अ व ज वि न ज गु र्वि वि गु र्वि ध ध नि वि श्व ध नि भू म ल वि म ल ज य वा दि
नि वृ व व ल र्हा र्हा र्हा र्हा सा ह ॥ य हुं मां धा ल नि धा व य न वा व य न सं प्र का स य न स म धा
वि रु व नि सृ ग रा ल वे नि स सृ क त रु त ग म कृ य नि गृ ह्म नि नु क वा न उ वा लि न मो र्ग न क य
आ टि स वि श्व मि स र्व या य क य गो रु ति नु क ल रु जा य न म हा न रु व नि दि ति व रु जा य
न नि द्या ध रा ह व नि रु ति स रु जा य न सं श्रु त वृ व य न्य नि यं वा न र्था का नि णा यि सि दि र्थ
न ॥ ॥ अ र्था म श्रु ता रु द्र व क य नि ह्म ना म धा व नि स मा य ॥ ४ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मा ८ २४ इ विद्या
विष्णुः सनः मिनि
वसु कन

॥ मा ८ ११ दिना द्वाद्वा

काया
मा ८ ४ कन विद्या

मा ८ ६ कन विद्या

मा ८ १२ कन विद्या

॥ मा ८ १३ कन विद्या

मा ८ १४ कन विद्या

मा ८ १५ कन विद्या
मा ८ १६ कन विद्या
मा ८ १७ कन विद्या
मा ८ १८ कन विद्या
मा ८ १९ कन विद्या
मा ८ २० कन विद्या
मा ८ २१ कन विद्या
मा ८ २२ कन विद्या
मा ८ २३ कन विद्या
मा ८ २४ कन विद्या

मा ८ २५ कन विद्या
मा ८ २६ कन विद्या
मा ८ २७ कन विद्या
मा ८ २८ कन विद्या
मा ८ २९ कन विद्या
मा ८ ३० कन विद्या
मा ८ ३१ कन विद्या
मा ८ ३२ कन विद्या
मा ८ ३३ कन विद्या
मा ८ ३४ कन विद्या

मा ८ ३५ कन विद्या

मा ८ ३६ कन विद्या

मा ८ ३७ कन विद्या

मा ८ ३८ कन विद्या

मा ८ ३९ कन विद्या

मा ८ ४० कन विद्या

मा ८ ४१ कन विद्या

मा ८ ४२ कन विद्या

मा ८ ४३ कन विद्या

मा ८ ४४ कन विद्या

मा ८ ४५ कन विद्या





१५ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ गुर्वध्वं गुर्वध्वं गुर्वसंघं तथैव च ॥ गुर्वध्वं ध्वं
तथैव गुर्वसंघं नमामहे ॥ कं गनं ॥ ० ॥ उर्वं वज्रादकं अमृतं रुचं रुद्रं स्वाहा ॥
लं वलं मत्तं ॥ उं यथा हि ज्ञानमार्गं ज्ञानादिना गुह्यं दिव्यं न वा विद्याः ॥ न त्वाहं
ज्ञाययिष्यामि वा ॥ शिवं सत्त्वं स्वनं हाय ॥ उं आः सर्वं तथा गन्तव्यं ॥ समथं
शिद्धं ॥ ॥ नासि य ॥ उं अमृतं श्रीवज्रं स्वाहा ॥ ३ ॥ वाहा वाय ॥ उं श्रीः स्वाहा ॥
क्रसहाय ॥ उं काय विष्णुं धनं स्वाहा ॥ ॥ पूजा रुद्रं सत्त्वं हाय ॥ उं श्रीः रुद्रं
नीकृत्वाहा ॥ ० ॥ पूजा रुद्रं शिष्यं गय ॥ उं नमो रुद्रं वनं पूषा कं रुद्रं जाय गय ॥

रु कनर्षं प्रह्लासुलंखा कला जगायावमिगाय कववरुगं कला मूनम्मिगुलं
रु वतिकन कवधूसवेना (गेविमूक) ४ सूत्रमनुजविस्तिर वल्लवदि फिकाकि
धनकनसमृद्धजा यगे नाशवं (ग) सुगगववगृह्णु सिनु काय कस्माधि कला
उत्सलखर सर्वगथा गगाधिसु कुक्कला ला ॥ खाननस्य लाहाथनयूक ॥ उवला
कि विमलखा ला ॥ खानवलिसतय ॥ ॥ थनयान ॥ उमन्नामिधि नरु मिमधय
का ना दिवदुवी जसं जार्ग मला रुगं वा युग्मिजलावनी मधुलायविहं का
मात्रं मत्रुमधु वल्लसि हासनकं यमवन्दगीवजसत्तदिहं कं कसर्व

ॐ क व र्णं वज्रवज्र घष्ठा धनं विविज्जरुव हारु विनं गिवसि श्री वरध्वनिर्न
ॐ उनीलव र्णं र्णं सुको लालं कर्णं रुगवर्णं शुभ्ररुद्रावर्कं ध्यात्वा ॥ १ ॥
वज्रका कर्णं मयु लसर्गय ॥ ॐ श्री पुवनसुक्ता वायु शुभ्रवज्रसुक्ता रुद्रावका यया ध्या
यमना र्णं पुनी कृत्वा हा ॥ ॥ स्नानवायु ॥ ॐ ह्रम (क्षमं व वं नमः ॥ ॐ ह्रीं अ (क्षमं व
वं नमः ॥ ॐ ह्रीं उ ह्रीं व वं नमः ॥ मध्या ॥ ॐ र्यं पू र्व विद हा यनमः ॥ ॐ वृजं वा दीयाय
नमः ॥ ॐ लज्जय न (क्षमं अवली या यनमः ॥ ॐ वं उ रु व कू व वं नमः ॥ ॐ या उ य दीया
यनमः ॥ ॐ वा उ य दीयाय नमः ॥ ॐ ला उ य दीयाय नमः ॥ ॐ वा उ य दीयाय नमः ॥ १ ॥
ॐ यगं रु वत्नाय नमः ॥ ॐ वयू रूष वत्नाय नमः ॥ ॐ लज्जय वत्नाय नमः ॥

ॐ वसुवत्ताय नमः ॥ ॐ व्यावकुवत्ताय नमः ॥ ॐ वासवकुवत्ताय नमः ॥ ॐ लाम
धि वत्ताय नमः ॥ ॐ वासवनिधाने नमः ॥ ॐ अरुवन्ताय नमः ॥ ॐ आसुय
नमः ॥ ॐ श्रीवज्रसत्त्वयुवननमः ॥ ॥ यूजायाय ॥ वज्रगन्धसाह ॥ वज्रसिद्ध
वायसाह ॥ वज्रयूथसाह ॥ वज्रधूपसाह ॥ वज्रनेत्रसाह ॥ वज्रलाजायसाह ॥
वज्रनामूलसुगीकसाह ॥ ॥ वज्रकलसहायकनय ॥ ॐ अष्टभुजमर्य
मन्त्रवत्तुदीयाय ॥ गिरिगंगसफवर्तसमाकीर्त ॥ ददन्मन्त्रदायि ॥ यत्रय
वृद्धधम्मसा ॥ संधयश्चनत्वेवय ॥ नियो मयामिरावन ॥ संपूर्णवत्तमधुल ॥

थन गुरु या यश उँ आः रुँ श्री मन् दद स ल्व यु नू व न च न ध क म ना य स म्ब क ह
ना व रा स न क ना य न मः रुँ न म स्त म्भु न म म्भु न मो न म ॥ रु क्ता रुँ ला न मः स्था
मि यु नू ना र्थ प सि द्ध म ग य स प सा दा कि न ल्घा स्तु न ना त्म क ४ न ल्व न त्व प रा प्रा वि
क व प रु ना ध का ना ४ प ल्घा न ना वि न दृ गी ना द स मू र्ध्वः न सि नि म स्तु नि नी र्थ यु नू
रा स न क ना य रुँ ग ग उँ न मा वृ क्षा य यु नू व न मा ध र्मा य ना व लो न मः सं द्या य म रु
रु म जि ह्वा वि स न ग न न मः ४ स र्व वृ द्ध न म स्या मि ध र्म व जि न हा धि न सं द्य क गी त सं
य न न ल्व ग य न म स्तु र्ग १ न ल्व ग य म ग न र्थ स र्व प नि दि आ म य अ नू मा द ड ग ल्घा र्थ

वृद्धवा (ॐ) द (यमनः॥ आ वा (ॐ) सर्वं यामि वृद्ध धर्मं ग (ॐ) कर्मं वा (ॐ) विष्णुं
कनाभं च स्वयं चार्थं यस्मि द्वयं उत्यादयामि वनवा विविष्णुं निमन्त्रयामि अहं स
विसृत्वा अष्टां व विष्णु वनवा विवा विकानां वृद्धा हव्यं जगता हिनाय दभना स
वया यानां युष्मन्नां वानूमा दना कृणाय वासं क विष्णामि अष्टां अष्टां यथा धर्मा गण॥
थनया य दभना ॥ अनादि मृतमसा वं कर्म निष्क यवा यन उत्तया पुस्तना जार्यं कर्म का
र्म हवा कृष्णमा विर्ग किं श्रीं आ गम वा गथा मोहनं सूर्यं दस यामि ॥ यथा गाय नः
गायि तु वत्त नि या य का थामा गा पि रुग्ण शमया गु वृष् अ न ख वा ख य वा का य वा वृद्ध व
वृद्ध धर्मं स य पूजा ॥ ॐ आर्य वेला वना य स्वाहा ॥ ॐ अ की त्या य स्वाहा ॥ ॐ वत्ते हं ह वा य स्वाहा ॥
ॐ अ की त्या य स्वाहा ॥ ॐ अ मा य सि ह्य स्वाहा ॥ ॐ वना य स्वाहा ॥ मा म कि य स्वाहा ॥ पा र्श्व य स्वाहा ॥

॥ अहं नमः स्वाहा नागः नमः स्वाहा ॥ उक्ते नमः स्वाहा शुभ
वृत्ति नमः स्वाहा ॥ यथापचाप पूजा ॥ उक्ते दयामहावीरालोकयामहका
दगदि कस्तुभावीरालोकयालेनमामाह ॥ ० ॥ धनसदायिपूजायाय ॥ उक्ते नमः श्री
वक्रसंवनाय ॥ ध्यान ॥ उक्ते रावयुक्तास्यमोः स्वावयुक्ताहं नृपतिनाको वंशयुक्ता
रावयुक्ता ॥ उक्ते अकावंधावन्मधुल ॥ उक्ते अकावंधासूर्यमधुल ॥ उक्ते वज्रवधहका
हं ॥ हाथजप ॥ ॥ उक्ते नमः स्वाहा हं वासुदेव हं हं हं हं हं हं ॥ द
क्षिणहस्त ॥ ॥ उक्ते हां या जीमा ऊकी हं हं हं हं हं हं वासुदेव नमः ॥

[illegible]

स्नान वा य न उं व नु म हा वा ख ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं कृष्ण व ना य हं हं ट स्वा हा ॥
 र्स्व ना व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं पि ना व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं व का व ना य हं
 हं ट स्वा हा ॥ उं भ्रमा ना व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं कृष्ण व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ ॥
 र्स्व ना व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं कृष्ण व ना य हं हं ट स्वा हा ॥ उं कृष्ण व ना य हं हं ट स्वा हा ॥
 निष्कृन्त कृन्त कृन्त अ व ल वी व न म स्तु ॥ ॥ ॥ धन द का द व पूजा या य ॥ ॥
 कृमा य न ॥ उं व कृ स त्व स म य म नू पा ल य ॥ व कृ स त्व म ना य नि द द म र व ॥ सा स म
 म र व ॥ सू या धा म र व ॥ ज नू व का म र व ॥ स व सि धि म य य कृ त्व स व क म म स

[illegible]

ॐ सूर्य दयाय ॥ नागसं ह वसं कासपय गसम हर्षं सकासावधमात्रुर्ध्वं वज्र
सूर्यो नमाम्यहं ॥ १ ॥ नागं रं श्रीं ॥ जयं जयं वाचुलिङ्गयलं शुक्रा लोत्रं ॥ इत्यय इत्यसं हलन
॥ लं नरु नालं हातं हाय प्रातः ॥ नावधिमात्रमित्त वाचुलं रजिन युदयानलं लं ॥ सयुक्ता नजिन न
नीव जजाना नीर जय जय होद शालं ननधुसुला र कलति कयात्र कल ॥ ५ ॥ नागं रं जय जय ॥ वृद्ध समस
नयिधि ॥ नृय कृत्तल नवसिधमात्रा र जय जय ग्राख ह जगत संसात्र ॥ पुनमामि इदं यवाचुलि ॥
नाग ॥ हं हं हं हं हं हं हं ॥ संसात्रा नृवर हं दं दं विगन ॥ जगत् ॥ हं वजातु ह्नाते नाहं ॥ प्र
ह वजातु ह्नाते नाहं हं हं नागं हं हं ॥ सुत्र नत्र वदित चवन वत्रं कसू मवित्रयन जागत् ॥
लावविमयुत विस्य हं हं हं हं हं ॥ कोटि यात्र ॥ प्र ॥ नमामि नमामि ॥ हं वजातु ह्नाते नाहं ॥
॥ यथियात्र ॥ प्र ॥ नागनामगु ॥ कलमाथ ॥ मदनि जत्र इमि वायु मं तु लउ यस्मि तशी गु मल्ल र नाना ॥

ललमयजातिनउ कितनजसंदृष्टं मन्त्रं ॥ ॐ ॥ नमामिनमामिणीं वृवजस्तत् ॥ नमो नमिषि साग
ना ॥ विश्वमाथ विश्व व्यापितं वृ ॥ गिरु वनसं पृथिगा ॥ ॐ ॥ शकासर्वं मुखनयनं विश्व
ल ॥ वज्रं च अस्त्रं च कितकं वृ ॥ सुखं च सुखं च ॥ नलमकृतसि ॥ ॐ ॥ नलं च वृ ॥ ललं च
वि वल ॥ सत्पुत्रं कसं सि ॥ वृ ॥ वदिवदिगं जं ननादि ॥ नलमं वृ ॥ ललं सपु ॥ ॐ ॥ हि हि पुमादि न
अ वृ ॥ विलासवज ॥ वृ ॥ नि न ॥ नसिल ॥ लो हि सिद्धि व नयु दगा ॥ स रजिने नानर व पु दगा ॥ ॐ ॥
१ माग नाम कति ॥ ॥ कम व वि का सि ग सि गि वि अ स न ॥ क म द प्रिय व र्मु स म द हा ॥ वृ ॥ न व र्मु न
वै ॥ वृ ॥ व न य द ल स न ॥ न नृ पु का सि ग ॥ न मा मि णी णी म ह म ॥ शी स क न ग न न ज स वृ ॥ ॐ ॥ म नि द
रु न न न व ल पु द ॥ स वृ ॥ न न नि वि सा ग ना ॥ ॐ ॥ य थ म क न द य अ लि त व ज र्मु म ड्या लि ग
न मा जि ग र दि ति य ॥ स वृ ॥ य द न ल ॥ व ॥ वृ ॥ थ र व स वृ ॥ न व ना ॥ ॐ ॥ उ र य र उ यो ग र व न
व र्म मू डा ॥ वृ ॥ थ र व स वृ ॥ न ल म क र सि न यु जालि ना ॥ किं वि र्म म वृ ॥ वि स व व ॥ ॐ ॥ नि व र्म व
दि हा वि नि मि ग क लि ग ॥ स वृ ॥ न न नि वि र व पु द ग र ॥ ॐ ॥ स वृ ॥ न न न मा ग न य न मा र्ग व ज र्मु ॥ ॐ ॥

१ॐ नमोस्तुते नार्थय ॥ त्वेता कथं गवर्णमा म्भहं ॥ श्रीजिनप्रभुमिता हसितं ववा ॥ का के नामनि ॥
यत्तसु ॥ गतिना ॥ त्वं धर्म नार्थ कवना मयाय ॥ १ ॥ यमसंस्ति न विनाम निरुक्ता ॥ सर्वदवग
धर्वा मागय क ॥ त्विह वन श्रवयु जनाय ॥ त्वं धर्म नार्थ कवना मयाय ॥ २ ॥ त्वं वन वृत्तु
ला कउ धायी ॥ त्वं युत गनह कंद दानि ॥ द्वाती सव कृण्णसु वन ज ॥ त्वं धर्म नार्थ कव
नामयाय ॥ ॥ मृग्य गसमा धिहृदय धवा ॥ त्वं ला क नार्थ सिंधु न साग वा ॥ त्वं गुत्र लार्थ कवना म
याय ॥ त्वं धर्म नार्थ कवना मयाय ॥ ॥ मदात्रि दुइ ॥ खह वनं कुत्र ॥ मइ ॥ खं वया धि
दवनं कुत्र ॥ त्वं युग मा मिम सुख द दामि ॥ त्वं धर्म नार्थ कवना मयाय ॥ ७ ॥ ॥ सव लम गना
मां वक्रा केलोति ॥ त्वं स्यामि मां सर्वयाय वनं ॥ म जन्म जन्म सुखा गायक ॥ ८ ॥ निगु मदाया व
लादि न श्रवण हार क स्य मनिहान धर्म कदा सु वसा उ म मा क ॥

॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

